वी.सी.डी. वार्तालाप 797, हाँसपुर (गोरखपुर), ता.19.10.07

Discussion class in VCD-797, dt.19.10.07 at Hanspur (Gorakhpur)

समय–7.10–8.06

जिज्ञासु – बाबा, मान लीजिए माता पढ़ी–लिखी नहीं है तो ज्ञान कैसे सुनायेगी?

बाबा – पढ़ी–लिखी नहीं है तो बिना पढ़े–लिखे क्या अच्छे कर्म नहीं करके दिखाते हैं? दिखाते हैं अच्छे कर्म, तो कर्मों से सेवा नहीं होती है क्या? बोल–बोल करने से ही सेवा होती है? या किसी की करनी देखकर भी लोग समझ जाते हैं ये बहुत अच्छी करनी करनेवाला है। कर्मो से शिक्षा देना वो ज्यादा बड़ी बात हैं। बोल–बोल करके शिक्षा देना, उस शिक्षा के ऊपर तभी लोग अमल करेंगे जब शिक्षा देने वाले में खुद धारणा होगी। धारणा नहीं होती है तो कोई असर नहीं पड़ता।

Time: 7.10-8.06
Student: Baba, suppose a mother is illiterate, how will she narrate knowledge?
Baba: If she is illiterate; don't the illiterate people perform noble acts? They perform noble actions; doesn't service take place through actions? Does service take place only through speech? Or do the people understand by observing someone's actions as well; that this person performs very noble actions. Teaching through actions is a greater thing. Teaches through speech, people will act upon the teaching only when the teacher has inculcated (the knowledge) himself. If there is no inculcation (*dhaarnaa*), there is no effect (of his teachings on others).

समय–8.33–16.14

जिज्ञासु – बाबा, ब्रह्मास्त्र क्या है? नारायणास्त्र क्या है? अग्नेयास्त्र ये सब का क्या अर्थ है?

बाबा – ब्रह्मा को अस्त्र–शस्त्र दिखाये हैं। ब्रह्मा के अस्त्र–शस्त्र और विष्णु के अस्त्र–शस्त्र ये अलग–अलग दिखाये हैं। वास्तव में हैं तो संगमयुग की बातें। ब्रह्मा का अस्त्र जैसे दंडी स्वामी हुआ करते हैं। उनके हाथ में कौन सा अस्त्र दिखाया जाता है? दंड दिखाते हैं। उसमें ऐसा फर्सा जैसा भी बना होता है वो उनका एकमात्र अस्त्र है। जिस अस्त्र से कहते है उन्होंने विश्वामित्र को जीत लिया। वो पवित्रता का अस्त्र है। उस पवित्रता के अस्त्र से उन्होंने सारी प्राप्ति की। उस प्राप्ति के आधार पर वह सतयुग में जाकर के प्रिन्स बनेंगे। ज्ञान नहीं है, योग नही हैं। ब्रह्मा स्वयम् रचना है। रचयिता बाप को नहीं जानते तो भी पवित्रता के आधार पर इतनी प्राप्ति करते हैं कि नयी दुनियां में पहला पत्ता बनते हैं। ये ब्रह्मास्त्र सबसे बड़ा अस्त्र हो जाता है।

Time: 8.33-16.14
Student: Baba, what is *Brahmastra*? What is *Narayanastra*? *Agneyastra*? What does all this mean?
Baba: Brahma has been shown to possess weapons (*astra* - *shastra*). The weapons of Brahma and the weapons of Vishnu have been shown to be different. Actually, these are the topics of the Confluence Age. Brahma's weapon…….. just like there are 'Dandi Swamis'. Which weapon is shown in their hands? A *dand* (a stick) is shown. Also an axe-like part is attached to it. It is their only weapon. It is said that he gained victory over Vishwamitra too, through that weapon. That is the weapon of purity. He attained everything through this weapon of purity. On the basis of that attainment, he will become Prince in the Golden Age. He does not have knowledge; he is not good at yoga. Brahma himself is a creation. He does not know the Father who is the creator; but still, on the basis of purity, he achieves such high

attainment that he becomes the first leaf of the new world. This *Brahmastra* becomes the biggest weapon.

ब्राह्मणों के जीवन का लक्ष्य क्या है? क्या बनना है? पवित्र बनना है। योगी भी किसलिए बनना है? पवित्र बनने के लिए योगी बनना है; इसलिए मुरली में बोला है – ब्रह्मा को फॉलो करो। शंकर को फॉलो नहीं करना है। किसको फॉलो करो? कर्मों में ब्रह्मा को फॉलो करो। कर्मेंद्रियों में पवित्रता भरी हुई हो ये हुआ ब्रह्मास्त्र

What is the aim of the life of we Brahmins? What do we have to become? We have to become pure. Why we have to become 'yogi' as well? To become pure, we have to become yogi. That is why it has been said in the Murli, "Follow Brahma." We have not to follow Shankar. Whom should we follow? We should follow Brahma in actions. There should be purity in our organs of action. This is the *Brahmastra*.

और अग्नेय अस्त्र। शास्त्रों में अग्नेयास्त्र का नाम आया है तो शास्त्र पढ़–पढ़ के विदेशियों ने एटम बम्ब तैयार कर लिये। अग्नि दो प्रकार की होती है। एक कामाग्नि होती है और एक क्रोधाग्नि होती हैं। कामाग्नि विनाश करने वाली हैं। ऐसे ही क्रोधाग्नि भी विनाश करने वाली है; परन्तु उसके सम कच्छ (समकक्ष) है उसका काट करने वाली योगाग्नि। जिनमें योगाग्नि होती है वह कोई भी प्रकार के क्रोधी को शान्त कर सकते है, वायब्रेशन के आधार पर। कैसा भी कामी हो, उसके वायब्रेशन में आने मात्र से शान्त हो जायेगा। बांधेली मातायें इस बात का अनुभव भी करती हैं। जब बहुत ही याद में होती है तो उनको सफलता मिल जाती है।

And *Aagney astra*. *Aagneyaastra* has been mentioned in the scriptures. So, by reading scriptures, the foreigners prepared atom bombs. The fire is of two types. One is the fire of lust (*kaamaagni*) and the other is the fire of anger (*krodhaagni*). The fire of lust is the cause of destruction. Similarly, the fire of anger too is the cause of destruction. But its equivalent (fire) to cut it is the fire of yoga (*yogagni*). Those who have the fire of *yog*, they can pacify any kind of angry person on the basis of vibrations. Whatever kind of lustful he may be, he will calm down just by coming in contact of her vibrations. The mothers in bondages experience this too. They achieve success, when they are very much in remembrance.

तीसरा शस्त्र क्या बताया? पाशुपति अस्त्र। पशु कहते हैं जानवर को। शंकर के साथ कौन सा पशु दिखाया जाता है? बैल दिखाया जाता है। वो बैल कोई दूसरा नहीं है। ब्रह्मा ही बैल है; इसलिए मुरली में बोला है – शंकर के ऊपर शिव की सवारी और शंकर किस पर सवारी करता है? बैल पर सवारी करता हैं। बैल अर्थात् ब्रह्मा की आत्मा, कृष्ण की आत्मा। वो ब्रह्मा की आत्मा की बुद्धि में ये बात बैठी है कि गीता का भगवान कौन है? नहीं बैठी है? तो शंकर सवारी कर सकेगा? नहीं कर सकता। तो अस्त्र–शस्त्र काम नहीं कर रहा हैं। इसलिए पाशुपत अस्त्र भी विख्यात है। जब योगबल बढ़ेगा तो सवारी भी बढ़ेगी।

What was the third weapon that was mentioned? *Paashupati astra*. *Pashu* means an animal. Which animal is shown along with Shankar? A bull is shown. That bull is no one else. Brahma himself is the bull. That is why it has been said in the Murli, "Shiv rides on Shankar and whom does Shankar ride on? He rides on the bull. Bull means the soul of Brahma, the soul of Krishna. Has it fitted into the intellect of the soul of Brahma that who is the God of Gita? It has not fitted. So, will Shankar be able to ride (him)? He cannot (ride). So, the weapons are not working. That is why the *Paashupat astra* is famous as well. When the power of yoga increases, the ride (on the bull) will increase as well.

कहते हैं छलाँग लगाते हैं और बैल पर सवार हो जाते हैं। छलाँग किसे कहा जाता है? हायजम्प। एक पुरूषार्थ होता है धीरे–धीरे चलने का, एक पुरूषार्थ होता है दौड़ने का, एक वो पुरूषार्थ होता है उड़ने का और एक पुरूषार्थ होता है हायजम्प लगाने का। तो जब हायजम्प लगाने का पुरूषार्थ होता है तो विजय प्राप्त हो जाती है। ये सारी दुनियां पशुओं की है। जानवर बुद्धियों की है। जानवरों के वायब्रेशन को भी कौन चेंज करेंगे? मनन–चिंतन–मंथन करने वाले मनुष्य चेंज करेंगे या कोई उपर से देवता उतरेंगे? मनन–चिंतन करने वाले मनुष्य ही वायब्रेशन को चेंज करेंगे। और जानवर बुद्धि भी सुधर करके जानवर (बुद्धि) से मनुष्य और मनुष्य से देवता बनेंगे। तो शास्त्रो में जो भी बातें आयी हुई है उसको संगमयुग के वर्तमान समय से टैली करना चाहिए। सब बातों का समाधान मिलता हैं।

It is said, "He takes a leap (*chalaang*) and rides on the bull." What is meant by *chalaang*? High jump. One type of efforts is like that of walking slowly; one type of efforts is of running; one type of efforts is of flying and one type of efforts is of taking a high jump. So, when the efforts are made of taking a high jump, He gains victory. This entire world is of animals, it is of those with an animal-like intellect. Who will change the vibrations of even the animals? Will the human beings who can think and churn change it or will any deities descend from above? Only the human beings who think and churn will change the vibrations and even those with an animal-like intellect will reform and transform from animal to human beings and then from human beings to deities. So, we should tally the topics that have been mentioned in the scriptures with the present time of the Confluence Age. We obtain the for all the topics.

समय–16.15–18.25

जिज्ञासु – बाबा, रामायण में राम को भी नागपाश से राक्षसों ने बांध दिया था। राम भी बंध गये।

बाबा – वो अही रावण की कथा दिखाते हैं। नाग किसे कहा जाता है? (किसी ने कहा– सर्प को) और शंकर को कितने प्रकार के सर्प दिखाये जाते हैं? एक कमर में सर्प दिखाया जाता है, दोनों बाजुओं में सर्प दिखाया जाता हैं, गले में सर्प दिखाते हैं और सबसे ऊपर सर के ऊपर सर्प दिखाते हैं। कोई काम विकार का सूचक है, कोई क्रोध विकार का सूचक है, कोई लोभ विकार का सूचक है। गले में मोह का सूचक है। और सबसे ऊपर अहंकार का सूचक है। ये पांच नाग, रावण के ही पांच रूप हैं। माया रावण कहा जाता है। माया रावण को जो टाइटल मिला हुआ है वो बाप के समान टाइटल मिला है कोई? जो बाप का टाइटल है सर्वशक्तिमान वह माया को भी सर्वशक्तिमान का टाइटल मिला हुआ हैं। वो नागों की भी शक्ति होती है। पांच विकारों की शक्ति में, पांच विकारों के पाश में हम सबको बांध के रखती है। ये नागपाश हैं।

Time: 16.15-18.25

Student: Baba, in Ramayana, the devils even tied Ram with *Naagpash* (noose of snakes). Ram was bound as well.

Baba: That is a story of 'Ahi Ravan' that is depicted shown. What is meant by *naag*? (Someone said, – snake) And, how many kinds of snakes are shown with Shankar is shown with how many kinds of snakes is Shankar said to be depicted with? One A snake is depicted shown around his waist; snakes are shown around both of his arms, snakes are shown around his neck; and above all a snake is shown on his head (around his hair locks). Some are indicators of lust, some are indicators of anger; some are indicators of greed, the one around the neck is an indicator of attachment and the topmost one is indicator of ego. These five

snakes are the five forms of Ravan. It is said, 'Maya Ravan'. Has Maya Ravan received any title equal to the Father? Even Maya has received the title of 'Almighty', which is the title of the Father. There is power of those snakes as well. It keeps all of us tied with the power of five vices, with the rope of the five vices. This is the *naagpash*.

समय–18.26–19.30

जिज्ञासु – बाबा, मन कितना विकारी है कि मन भागता है और स्थिर नहीं होता है।

बाबा – मन भागता है, 63 जन्म भगाया है तो भगाने की प्रैक्टिस ज्यादा की है या थमाने की प्रैक्टिस ज्यादा की है? भगवान को सर्वव्यापी मान लिया। इधर भगवान, उधर भगवान, यहां भगवान, वहां भगवान, इस तीर्थ में, उस तीर्थ में, तो भागने की प्रैक्टिस हमने की ना! तो अब क्या करना पड़े? मन को एकाग्र करने की प्रैक्टिस करनी पड़े। जितना भगाया है उतना एकाग्र करने की प्रैक्टिस करनी पड़े। बार–बार भागे बार–बार थमाओ और किसी जन्म में तो ये अभ्यास हम को किसी ने सिखाया नहीं। अभी इसी एक जन्म में बाप हम को बताते हैं कि अभ्यास से ही इसको कंट्रोल किया जा सकता है। और कोई दूसरा उपाय नहीं।

Time: 18.26-19.30

Student: Baba, the mind is so vicious; the mind keeps running and it does not become stable.

Baba: The mind runs; we have made it run for 63 births; so have we practiced more to make it run or have we practiced more to stop it? We considered God to be omnipresent. God is here, God is there, God is here, God is there,, (God is) in at this pilgrimage place center, (God is) at in that pilgrimage center place; so, we have practiced to make it run, haven't didn't we? So, what should be done now? We have to practice to concentrate the mind. As much we have made it run, we have to practice to concentrate it to that extent. If it runs again and again, stop it again and again. Nobody taught us to practice this in any other birth. Now, in this birth the Father tells us that it (the mind) can be controlled only through practice. There is no other way.

समय–20.25–21.05

जिज्ञासु – 18 अध्याय गीता है ना! सन् 47 से 50 तक की मुरलियाँ....

बाबा – सन् 47 से 50 तक जो वाणियाँ चली उनकी कॉपियाँ नहीं निकलती थी; क्योंकि एक ही स्थान पर रहे पड़े थे। जब माउंट आबू में आ गये और इधर–उधर सेवा के लिए भेजा जाने लगा तो उसकी कॉपियाँ निकलने लगी और चारों तरफ बांटी जाने लगी; इसलिए उसको कहेंगे गीता शास्त्र। ग्रंथ बन गया, ग्रथित हो गया।

Time: 20.25-21.05

Student: There are 18 chapters of Gita, aren't there? The Murlis from 1947 to 1950…..

Baba: The copies of the Vanis that were narrated from 1947 to 1950 were not used to be issued because everyone was living at the same place. When they came to Mt.Abu and started to be sent here and there for service, the copies began to be issued and circulated in all the four directions. That is why it will be called as the scripture of Gita. It became a book (granth). It became tied (granthit).

समय– 21.10–22.46

जिज्ञासु – हर कल्प के बाद सृष्टि की हूबहू पुनरावृत्ति होती हैं तो कभी ऐसा भी हुआ होगा की पहली बार कल्प चला हो। तो उसमें हर आदमी को अलग–अलग पार्ट दिया गया है तो किसी को अच्छा पार्ट दिया गया है या किसी को बुरा। ऐसा क्यो?

Time: 21.10-22.46

Student: The world (cycle) is repeated same to same after every *kalpa*. So, would it have happened that a kalpa must have occurred for the first time? So, every person was given a different role in it; so, someone was given a good role and someone was given a bad (role). Why is it so?

बाबा – आत्मा अनादि है, अजर–अमर अविनाशी हैं या उसका आदि होता है? आत्मा अजर–अमर अविनाशी हैं। तो आत्मा अजर–अमर अविनाशी हैं तो आत्मा का पार्ट भी अविनाशी है, वो बनाया नहीं जाता हैं। ये ऐसा रेकॉर्ड है जो कभी खतम होने वाला नहीं है। जिस आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है वो ज्यों–का–त्यों वैसे ही रिपीट होता रहता हैं। अगर कोई कहे कब भरा गया तो सवाल पैदा होता है किसने भरा? तो इन बातों के सवाल का जवाब नहीं और सवाल भी नहीं। आत्मायें भी अजर–अमर–अविनाशी, परमात्मा बाप भी अजर–अमर–अविनाशी और ये सृष्टि चक्र और उसके पांच तत्व भी अजर–अमर–अविनाशी। इनके बारे में ये नहीं कहा जा सकता कि कब बना। ये चक्र है जो घूमता ही रहता है।

Baba: Is the soul eternal (anadi); is it changeless (ajar), immortal (amar) and indestructible (avinaashi) or does it have a beginning? The soul is changeless, immortal and indestructible. So, when the soul is changeless, immortal and indestructible, the role of the soul is also imperishable indestructible as well. It is not made. It is such a record that is never going to be erased end. The soul in which the role of 84 births is recorded, keeps repeating as it is. If someone asks, "when was it filled?", then the question arises as to 'who filled it?' So, there are neither answers to the questions for these issues nor are there any questions. The souls as well as the Supreme Soul Father is *changeless, immortal and indestructible* and also this world cycle and its five elements are *changeless, immortal and indestructible*. It cannot be said about them that when were they formed. It is a cycle that keeps revolving.

समय–33.45–35.07

जिज्ञासु– बाबा, एक बच्चा परेशान है कि शंकर का पार्ट मुरली में क्यों नहीं बताया जाता है।

बाबा – शंकर का पार्ट मुरली में नहीं बताया जाता? शंकर का नाम लिया जाता है मुरली में? नाम लिया जाता है तो नाम किस आधार पर पड़ता है? काम के आधार पर पड़ता हैं। इससे समझ लेना चाहिए कि नाम नहीं है तो क्या हुआ नाम होता ही तब है जब कोई काम होता है। और ऐसे भी नहीं है कि मुरली में ये बोला है – शंकर है ही नहीं। क्या? शंकर है; परन्तु शंकर का कोई पार्ट नहीं हैं। पार्ट नहीं है का मतलब, पार्ट बजाया जाता है कर्मेन्द्रियों से। वो शंकर जो है वो कर्मेन्द्रियों से पार्ट कम बजाता है; लेकिन मन, बुद्धि से पार्ट जास्ती बजाता है; इसलिए बोला – शंकर का पार्ट नहीं बाक़ी शंकर जरूर हैं; इसलिए कहा जाता है योगबल से विश्व की बादशाही। किसने ली? शंकर के लिए ही गाया जाता है विश्वनाथ; बाक़ी किसी मनुष्य के लिए थोड़े ही गाया जाता हैं।

Time: 33.45-35.07

Student: Baba, a child is disturbed that why isn't the role of Shankar mentioned in the Murlis?

Baba: Isn't the role of Shankar mentioned in the Murlis? Is the name of Shankar taken in the Murlis? The name is taken. So, on what basis is someone named? Someone is named on the basis of the task. One should understand through it that, 'what if the name is not mentioned?' Someone is named only when a task is performed (through him). And also it is not that it has been said in Murlis, "Shankar does not exist at all." What? Shankar does exist, but there is no role of Shankar. He does not have a role means that, a role is played through the organs of action. Shankar plays less role through the organs of action, but plays more role through the mind and intellect. That is why it has been said "Shankar does not have a role." And as for the rest, Shankar does exist. That is why it is said, "Emperorship of the world through the power of yog." Who obtained it? It is famous only about The praise is alone for Shankar that he is as *Vishwanath* (Master of the world); as for the rest it is not praised/famous for any other human being.

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.